Philosophy
Explore – Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

कर्म और भाग्य : एक दार्शनिक विश्लेषण

प्रिया कुमारी तिवारी • हिन्दुजा भारती श्री • अनुप्रिया सिंह
कुमकुम रानी

Received : December 2010
Accepted : February 2011
Corresponding Author : Kumkum Rani

Abstract : *चार्वाक को छोड़कर शेष सभी भारतीय दार्शनिक कर्म के नियम में आस्था रखते है। कर्म का नियम नैतिकता के क्षेत्र में काम करने वाला कारण नियम ही है। इसका अर्थ यह है कि शुभ कर्म का फल अनिवार्यत: शुभ होता है और अशुभ कर्म का फल अनिवार्यत: अशुभ होता है । अच्छा काम आत्मा में पुण्य पैदा करता है जो कि सुख भोग का कारण बनता है। बुरा काम आत्मा में पाप पैदा करता है जो कि दु:ख भोग का कारण बनता है। सुख और दु:ख क्रमश: शुभ और अशुभ कर्मों के अनिवार्य फल है। इस नैतिक नियम की पकड़ से कोई भी नहीं छूट सकता । शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के कर्म सूक्ष्म संस्कार छोड़ जाते है जो निश्चय ही भावी सुख-दुख के कारण बनते हैं । वे अवश्य ही फल पैदा करते हैं । इन फलों का भोग इस जन्म में निकट या सुदूर भविष्य में किया जाता है या आगामी जन्मों में किया जाता है ।*

कर्म के नियम का बीज रूप ऋग्वेद के 'ऋत' की धारणा में मिलता है । उपनिषदों में तो कर्म के नियम की स्पष्टत: नैतिक नियम के रूप में धारणा दी गई है । बृहदारण्यक और छान्दोग्य उपनिषदों में कहा गया है कि मनुष्य शुभ कर्म करने से धार्मिक बनता है और अशुभ कर्म करने से पापी । संसार जन्म और मृत्यु का एक अनन्त चक्र है मनुष्य अच्छे कर्म करके अच्छा जन्म पा सकता है और आत्मा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करके संसार से मुक्त हो सकता है। न्याय वैशेषिक, सांख्य योग, मीमांसा और वेदान्त भी कर्म के नियम में आस्था रखते हैं ।

दैव एक अदृश्य शक्ति है । यह 'अदृष्ट' है । इसका यह अर्थ नहीं कि दैव कोई अद्‌भूत शक्ति है। पूर्व जन्मों के संचित धर्मों को ही दैव कहा जाता है । अत: जब हम दैव को किसी कर्म का कारण बतलाते हैं तो उसका अर्थ है कि हमारे चेतन प्रयत्नों द्वारा वह कर्म नहीं हुआ अपितु वह अदृश्य शक्तियों का फल है अर्थात् हमारे कर्मों का फल है ।

कर्मों की निश्चयता और उसके फल के संबंध में दो मत है। एक जो कर्मों को निश्चित करने में और उसके फल के विषय में दैव का प्रभाव बतलाता है, दूसरा जो पुरुषकार अर्थात मानव प्रयत्नों का ही प्रभाव मानता है। पहले मत को भाग्यवाद भी कहा जाता है और दूसरे को स्वच्छन्दतावाद । भाग्यवाद के अनुसार ईश्वर ने जैसा निश्चित किया है या भाग्य में जो पहले से लिखा हुआ है वैसे ही कर्म होंगे मनुष्य के और उसका वैसा ही फल होगा । अत: किसी उद्देश्य की प्राप्ति में सफलता मिलेगी अथवा नहीं, यह पहले से निश्चित है । मनुष्य के प्रयत्नों का इसमें कोई मूल्य नहीं है । जो वदा है वही होगा । हमारा संकल्प स्वतन्त्र नहीं है। भाग्यवादी पूर्व-कर्मफल का महत्त्व भी बतलाते हैं ।